इकाई 6 ऐतिहासिक भौतिकवाद

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 ऐतिहासिक भौतिकवाद

6.2.1 पृष्ठभूमि

6.2.1.1 लोकतंत्र में मार्क्स का विश्वास

6.2.1.2 लोकतंत्र तथा साम्यवाद

6.2.1.3 इतिहास की अवधारणा

6.2.1.4 इतिहास के प्रति समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

6.2.2 मूल मान्यताएं

6.2.2.1 अन्तर्संबंधित समष्टि के रूप में समाज

6.2.2.2 समाज की परिवर्तनशील प्रकृति

6.2.2.3 मानवीय प्रकृति तथा सामाजिक संबंध

6.2.3 सिद्धांत

6.2.3.1 व्यक्तियों से परे सामाजिक संबंध

6.2.3.2 अधोसंरचना (infrastructure) तथा अधिसंरचना (supersturecture)

6.2.3.3 उत्पादन की शक्तियां और संबंध

6.2.3.4 सामाजिक वर्गो के संदर्भ में सामाजिक परिवर्तन

6.2.3.5 उत्पादन की शक्तियां और संबंधों के मध्य वाद-संवाद प्रक्रियापरक

6.2.3.6 क्रांति तथा समाजों का इतिहास

6.2.3.7 यथार्थ तथा चेतना

6.3 ऐतिहासिक भौतिकवाद आर्थिक निर्धारणवाद नहीं है

6.4 समाजशास्त्रीय सिद्धांत में ऐतिहासिक भौतिकवाद का योगदान

6.5 सारांश

6.6 शब्दावली

6.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

6.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

यह इकाई ऐतिहासिक भौतिकवाद के बारे में है। इसको पढ़कर आपके द्वारा संभव होगा

- ऐतिहासिक भौतिकवाद के सिद्धांत की व्याख्या करना
- समाज व सामाजिक परिवर्तन पर मार्क्स के दृष्टिकोण का वर्णन करना
- ऐतिहासिक भौतिकवाद के सिद्धांत का समाजशास्त्र में योगदान समझना।

6.1 प्रस्तावना

जिस संदर्भ में समाजशास्त्र का उदय यूरोप में हुआ, इसके बारे में आपने खंड 1 में पढ़ा है।

इसमें आपको यह बताया जा चुका है कि फ्रांसीसी तथा औद्योगिक क्रांति का समाजशास्त्र के संस्थापकों के विचारों पर काफ़ी प्रभाव पड़ा। खंड 2 में समाजशास्त्र के एक संस्थापक अर्थात् कार्ल मार्क्स पर चर्चा की गई है। उसके विचार इन क्रांतियों के बारे में समाजशास्त्रीय अन्तर्दृष्टि से परिपूर्ण थे। इस इकाई की विषय वस्तु, ऐतिहासिक भौतिकवाद, मार्क्स के समाजशास्त्रीय विचारों का वैज्ञानिक केन्द्र है। अत: यह आवश्यक हो जाता है कि हम ऐतिहासिक भौतिकवाद को समाजशास्त्रीय सिद्धांत में मार्क्स के एक योगदान की तरह देखें और इसे मार्क्स की सभी कृतियों के सम्पूर्ण परिप्रेक्ष्य में देखें।

इसी उद्देश्य के साथ इस इकाई के भाग 6.2.1 में सर्वप्रथम उस दार्शनिक एवं सैद्धांतिक पृष्ठभूमि की संक्षिप्त चर्चा की गई है, जिसके बौद्धिक और सामाजिक सन्दर्भ में ऐतिहासिक भौतिकवाद का उदय हुआ। तदुपरान्त भाग 6.2.2 में उन मूल मान्यताओं की चर्चा की गई है जिन पर ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धान्त आधारित है। इसके बाद भाग 6.2.3 में ऐतिहासिक भौतिकवाद के सिद्धान्त की व्याख्या की गई है तथा भाग 6.3 में आर्थिक निर्धारणवाद के खण्डन के लिये मार्क्स के विचारों को बताया गया है। अंतत: यह इकाई भाग 6.4 में समाजशास्त्रीय सिद्धान्त में ऐतिहासिक भौतिकवाद के कुछ प्रमुख योगदानों को सूचीबद्ध करती है। उपरोक्त भागों की सही समझ मार्क्स के विचारों से संबंधित अगली इकाइयों के अध्ययन में आपको मदद देगी।

6.2 ऐतिहासिक भौतिकवाद

समाज के बारे में मार्क्स के सामान्य विचारों को ही उसका ऐतिहासिक भौतिकवादी सिद्धान्त कहा जाता है। भौतिकवाद (materialism) समाजशास्त्र के चिन्तन का आधार है, क्योंकि मार्क्स के अनुसार भौतिक दशायें अथवा आर्थिक कारक समाज की संरचना और विकास को प्रभावित करते हैं। उसके सिद्धांत के अनुसार भौतिक दशायें अनिवार्यत: उत्पादन का तकनीकी साधन हैं तथा मानवीय समाज उत्पादन की शक्ति और संबंधों से बनता है। इस इकाई में तथा इसके बाद की इकाई में आपको उत्पादन की शक्तियों और संबंधों के अर्थ के बारे में भी बताया जाएगा। आइये, हम यहाँ आपको मार्क्स के समाज के सिद्धान्त के बारे में बतायें कि इसे ऐतिहासिक तथा भौतिकवादी क्यों कहा जाता है। यह ऐतिहासिक इसलिये है, क्योंकि मार्क्स ने इसके द्वारा मानवीय समाजों की एक अवस्था से दूसरी अवस्था में विकसित होने की क्रिया को बताया है। इसे भौतिकवादी इसलिये कहा गया, क्योंकि मार्क्स ने मानवीय समाज के विकास की व्याख्या भौतिक अथवा आर्थिक आधारों पर की है।

सम्पूर्ण मानव समाज को समझने के अपने प्रयासों में मार्क्स ने अपने आपको किसी भी समय मानवीय समाज की मौजूदा संरचना को समझने तक ही सीमित नहीं रखा। उसने इन समाजों को मानव के भविष्य के सन्दर्भ में भी समझने का प्रयास किया। मार्क्स के लिये विश्व का विवरण देना ही पर्याप्त नहीं था, उसके पास इसमें परिवर्तन के लिये भी एक योजना है। यही कारण है कि मार्क्स के समाजशास्त्रीय चिन्तन में अधिकांशत: परिवर्तन की प्रक्रिया संनिहित है। सामाजिक परिवर्तन को समझने के लिये मार्क्स ने मानव समाज की विभिन्न अवस्थाओं की परिकल्पना को जर्मन दार्शनिक हीगल से लिया है। इन अवस्थाओं के बारे में हमने इस खंड की 8 तथा 9 इकाईयों में विस्तार से चर्चा की है।

इस इकाई में मार्क्स के समाजशास्त्रीय विचारों पर ही ध्यान केन्द्रित किया गया है। ध्यान रहे कि यहाँ मार्क्सवाद के विभिन्न प्रकारों अथवा मार्क्स के विचारों की उन विभिन्न व्याख्याओं की चर्चा नहीं की जा रही है जो कि साम्यवादी राष्ट्रों की सरकारी विचारधारा बनीं।

मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद के सिद्धान्त को समझने के लिये हमें मार्क्स के समय के समाज में पाए जाने वाले विरोधाभासों की ओर ध्यान देना होगा। फ्रेडरिक एंजल्स के अनुसार

ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धान्त मार्क्स ने प्रतिपादित किया था। जबकि मार्क्स के अनुसार इस सिद्धांत का विकास फ्रेडरिक एंजल्स ने किया था। यह कहा जा सकता है कि इन दोनों ही विद्वानों ने इस सिद्धांत को अपनी सभी कृतियों में "निदेशक सूत्र" के रूप प्रयुक्त किया है।

एंजल्स के अनुसार ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत इतिहास को समझने का एक विशिष्ट दृष्टिकोण है। इस विचार के माध्यम से ऐतिहासिक घटनाओं के पीछे छिपे मूल तत्वों को समझने का प्रयास किया गया है। कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंजल्स दोनों ही इतिहास की व्याख्या की वैज्ञानिक प्रकृति पर ज़ोर देते हैं। *जर्मन आईडियोलॉजी* (1845-46) नामक पुस्तक में मार्क्स तथा एंजल्स ने कहा कि इतिहास पर उनके विचार वास्तविक दशाओं के वैज्ञानिक प्रेक्षण और विवरण पर आधारित हैं। इस सिद्धांत को समझने के लिये आपको उस पृष्ठभूमि को भी समझना होगा, जिसने समाज के बारे में मार्क्स के विचारों को ताना-बाना दिया।

6.2.1 पृष्ठभूमि

मार्क्स का बचपन और युवा अवस्था यूरोपीय इतिहास के उस काल में बीते जब कि प्रतिक्रियावादी शक्तियां राजतन्त्रात्मक राजनैतिक व्यवस्था का समर्थन कर रही थीं। नेपोलियन के उपरांत यूरोप से फ्रांसीसी क्रांति के सभी प्रभावों और अवशेषों को मिटाने का प्रयास किया जा रहा था। दूसरी ओर जर्मनी में एक **उदारवादी** आंदोलन लोकप्रिय हो रहा था, जो कि व्यक्ति की स्वायत्तता और राजनैतिक तथा नागरिक स्वतन्त्रता की सुरक्षा के लिये ज़ोर दे रहा था। इस आंदोलन को फ्रांसीसी क्रांति से बल मिला था। 1830 के दशक के अंत में, युवा हीगलवादियों ने उस समय की सामाजिक राजनैतिक दशाओं में आमूल परिवर्तन के पक्ष में आवाज़ उठाई थी। हीगल के दर्शन को मानने वालों को युवा हीगलवादी कहा जाता था। मार्क्स बर्लिन विश्वविद्यालय में क़ानून तथा दर्शन का अध्ययन करते समय इन लोगों के साथ औपचारिक रूप से जुड़ गया था। हीगल तथा उसके दर्शन के बारे में जानने के लिये कोष्ठक 6.1 तथा 6.2 देखिए।

यद्यपि युवा हीगलवादियों में मार्क्स सबसे कम आयु का था, उसे इन लोगों के बीच जल्दी ही सम्मान और प्रशंसा मिले। इन लोगों ने मार्क्स में एक नये हीगल को या यों कहें कि एक शक्तिशाली हीगल-विरोधी को देखा।

कोष्ठक 6.1: गियोग विल्हेल्म फ्रीडरिश हीगल

गियोग विल्हेल्म फ्रीडरिश हीगल का जन्म स्टुटगार्ट में 27 अगस्त, 1770 में हुआ तथा उसकी मृत्यु बर्लिन में 14 नवम्बर, 1831 को हुई। वह एक राजस्व अधिकारी का पुत्र था। उसने ट्यूबिर्गन विश्वविद्यालय में साहित्य, धर्मशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया। 1805 में, वह 35 वर्ष की आयु में, जेना विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बन गया। उसकी मुख्य कृतियां हैं, *द फ़िनॉमेनॉलॉजी ऑफ़ माइंड (1807), द साइंस ऑफ़ लॉजिक (1812), द फ़िलॉसॉफ़ी ऑफ़ राइट (1821), और द फ़िलॉसॉफ़ी ऑफ़ हिस्ट्री (1830-31)*।

मार्क्स पर हीगल के प्रभाव के संदर्भ में आपके लिये यह जानना आवश्यक है कि मार्क्स हीगल के इतिहास के दर्शन तथा तर्क के विज्ञान से प्रभावित था (हीगल के सिद्धांतों के इन दोनों पक्षों के लिए देखिए कोष्ठक 6.2)।

मार्क्स को प्रभावित करने वाले अन्य विद्वानों में बी. द **स्पिनोज़ा** (1632-1677) और ए. **ह्यूम** (1711-1776) का नाम लिया जा सकता है। इन दोनों की कृतियों के गहन अध्ययन ने मार्क्स को प्रजातंत्र की सकारात्मक अवधारणा विकसित करने में सहायता दी। मार्क्स की यह अवधारणा जर्मनी में उस समय के क्रांतिकारियों (radicals) द्वारा मान्य विचारों से कहीं आगे थी। ये क्रांतिकारी (radicals) एक ऐसे राजनैतिक समूह के सदस्य थे जो आमूल परिवर्तन की नीतियों, क्रियाओं और विचारों से जुड़े थे।

6.2.1.1 लोकतंत्र में मार्क्स का विश्वास

प्रारंभिक एवं मध्य उन्नीसवीं शती यूरोप में प्रचलित अनेक विचारधाराओं की बौद्धिक विरासत से मार्क्स को अपनी अन्तर्दृष्टि, अभिवृत्तियों, तथा अवधारणाओं को विकसित करने का अवसर मिला। इसमें लोकतान्त्रिक आस्था की मूल मान्यतायें तथा फ्रांसीसी क्रांति के नारे भी शामिल थे।

6.2.1.2 लोकतंत्र तथा साम्यवाद

लोकतंत्र पर मार्क्स के क्रांतिकारी विचार अमरीका, इंग्लैंड और फ्रांस की क्रांति जैसी ऐतिहासिक घटनाओं के अध्ययन पर आधारित थे। इन ऐतिहासिक घटनाओं के अध्ययनों से उसने यह निष्कर्ष निकाला कि **सर्वहारा** समूह (proletarian) के लोकतंत्र की अवस्था अस्थाई व परिवर्तनशील होती है। इस अवस्था को सामान्यतया तथा अनिवार्यतया साम्यवाद में बदल जाना पड़ता है। मार्क्स के अनुसार साम्यवाद एक ऐसी व्यवस्था है, जिसमें सभी वस्तुओं पर सभी का सामूहिक स्वामित्व होता है और वे सभी को प्राप्त होती हैं। साम्यवादी विचारों में विश्वास बढ़ जाने के बाद मार्क्स ने अर्थशास्त्र का गहन अध्ययन प्रारंभ किया। इस दौर में वह एक उदारवादी (liberal) से साम्यवादी (communist) के रूप में विकसित हो रहा था। उसने बी. द स्पिनोज़ा, एल. फायरबाख़, **एलेक्सिस द टॉक्विल** जैसे यूरोपीय चिन्तकों से बहुत कुछ सीखा (देखिये शब्दावली 6.6 तथा कोष्ठक 6.3)।

6.2.1.3 इतिहास की अवधारणा

जिस ऐतिहासिक युग में मार्क्स कार्यशील रहा वह फ्रांसीसी क्रांति से प्रारंभ होता है। यह काल औद्योगिक और सामाजिक क्रांति के उस सम्पूर्ण युग के साथ-साथ चलता है जो कि अन्ततः आधुनिक युग में बदला। यही कारण है कि ऐसे समय में उपजे मार्क्स के विचारों में एक ज़ोरदार अपील है, जो कि उस समय के इतिहास की देन है।

तीस वर्ष की आयु से पहले मार्क्स ने एक बहुत बड़ी संख्या में लेख लिखे। ये सभी मिलकर मार्क्स की ऐतिहासिक भौतिकवादी अवधारणा की समुचित रूप-रेखा प्रदान करते हैं। यद्यपि मार्क्स ने ऐतिहासिक भौतिकवाद पर स्पष्ट रूप से कभी नहीं लिखा, 1843-1848 के बीच के समय में उसके लेख इसकी ओर सरसरी नज़र डालते हैं। मार्क्स के लिये यह कोई एकदम नया दार्शनिक सिद्धांत नहीं था। वस्तुतः सामाजिक ऐतिहासिक अध्ययनों का यह एक व्यवहारिक तरीका था। राजनैतिक रूप से कार्य-योजना के लिए भी यह एक आधार था।

इस सिद्धांत की संरचना अवश्य ही हीगल से प्रेरित थी। हीगल की भांति ही मार्क्स ने भी इस बात को माना कि मनुष्य का इतिहास सरल रूप में एक दिशा में चलने वाली प्रक्रिया है, जिसमें अवस्थायें पुनर्घटित नहीं होतीं। इसके साथ-साथ वह यह भी मानता था कि इतिहास की प्रक्रिया में निहित नियमों को खोजा जा सकता था। परन्तु शीघ्र ही आपको स्पष्ट होगा कि किस प्रकार मार्क्स हीगलवादी दर्शन से परे चला जाता है। युवा हीगलवादियों में से अनेक ने हीगल के विचारों में दोष पाया और उन विचारों को नया रूप देने का प्रयास किया। परन्तु केवल मार्क्स ही इन विचारों की सुव्यवस्थित श्रृंखला विकसित कर सका, जो कि वस्तुतः बाद में समाज के बारे में हीगलवादी सिद्धान्तों से कहीं आगे निकल गई। आइए हम कोष्ठक 6.2 में समझें कि हीगल के इतिहास का दर्शन (philosophy of history) तथा तर्क विज्ञान (science of logic) क्या हैं।

कोष्ठक 6.2: हीगल का इतिहास दर्शन

हीगल उदारवादी था अर्थात उसने कुछ व्यक्तियों के शासन की अपेक्षा कानून के शासन को मान्यता दी। इस तरह उसने प्रशा **राज्य** (जर्मनी के विगत साम्राज्य) की सत्ता को

माना। उसका दर्शन प्रत्ययवादी (idealist) परम्परा से जुड़ा हुआ था। यह परम्परा इमानुअल काँट से शुरू हुई तथा हीगल ने इसे अपनी चरमसीमा तक पहुंचाया। हीगल के अनुसार तर्क यथार्थ का मूल तत्व है जिसकी अभिव्यक्ति इतिहास की प्रक्रिया में होती है। उसका कहना था कि तर्क की वृद्धि से उसकी जागरूकता पैदा हो जाने तक की प्रक्रिया ही इतिहास है। उसने संवैधानिक राज्य को इतिहास की प्रगति का शिखर माना। हीगल के अनुसार 'स्वतंत्रता की चेतना में वृद्धि' का दूसरा नाम इतिहास है। हीगल के अनुसार मानव इतिहास का विकास इसाई धर्म, सुधारवाद, फ्रांसीसी क्रांति एवं संवैधानिक राजतंत्र की दिशा में हो रहा था। उसका यह भी मत था कि संवैधानिक राजतंत्र को चलाने वाले शिक्षित राज्याधिकारी ही मानव प्रगति के विचारों को जानते पहचानते हैं।

हीगल के विचारों को मानने वाले युवा हीगलवादी कहलाते थे। मार्क्स भी इन्हीं में से था। युवा हीगलवादियों ने कालांतर में हीगल के विचारों से हटकर यह दावा किया कि मानव इतिहास की प्रगति के विचारों को केवल शिक्षित पदाधिकारी ही नहीं समझते अपितु सभी नागरिक इन विचारों को समझने की क्षमता हासिल कर सकते हैं। शुरू में कार्ल मार्क्स ने मानव इतिहास के विचारों को हीगल के दृष्टिकोण पर आधारित करके विकसित किया। लेकिन बाद में वह भी युवा हीगलवादियों के साथ जुड़ गया। अंततः उसने मानव समाज के इतिहास के बारे में अपने स्वतंत्र विचार विकसित किए। इन्हें ऐतिहासिक भौतिकवाद कहा जाता है। इसीलिए कहा जाता है कि "मार्क्स ने हीगल को सिर के बल खड़ा कर दिया।" मार्क्स ने धर्म, राजनीति व क़ानून से सम्बन्धित हीगल के रूढ़िवादी विचारों की आलोचना की।

हीगल का तर्कशास्त्र

मार्क्स ने हीगल के प्रत्ययवाद (idealism) को नहीं माना परन्तु उसने हीगल की वाद-संवाद प्रक्रिया पद्धति को अपना लिया। इस खंड की इकाई 9 में वाद-संवाद प्रक्रिया की अवधारणा पर विस्तारपूर्वक चर्चा की जाएगी। आइए, यहाँ हम वाद-संवाद प्रक्रिया पर हीगल की मूल धारणा पर दृष्टिपात करें।

हीगल के अनुसार हर वाद (thesis) का एक प्रतिवाद (antithesis) होता है। वाद किसी विचार के सकारात्मक दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति है जबकि वाद का विपरीत अथवा नकारात्मक दृष्टिकोण प्रतिवाद कहलाता है। इसका अभिप्राय है कि हर सत्य कथन का एक विपरीत कथन होता है। ऐसा प्रतिवाद अथवा विपरीत कथन भी अपने आप में एक सत्य होता है। समय के साथ वाद तथा प्रतिवाद संवाद के रूप में घुल मिल जाते हैं। संवाद एक सम्मिश्रित दृष्टिकोण होता है। कालांतर में यह संवाद फिर से एक नया वाद बन जाता है। इस नए वाद का फिर एक नया प्रतिवाद उत्पन्न होता है। इस नए वाद तथा प्रतिवाद से मिलकर एक और नए संवाद की संभावना हो जाती है। इस तरह वाद-संवाद की प्रक्रिया चलती रहती है।

हीगल ने इतिहास में विचारों की प्रगति को द्वंद्ववाद की प्रक्रिया से समझा। मार्क्स ने द्वंद्ववाद की अवधारणा को अपनाया लेकिन उसे, हीगल की तरह, विचारों की प्रगति की अवधारणा में कोई सार नहीं दिखाई दिया। मार्क्स के अनुसार सत्य का मूल आधार विचार न होकर पदार्थ होता है। उसने भौतिकवाद द्वारा सत्य को अभिव्यक्त करने की कोशिश की। इसीलिए मार्क्स के सिद्धांत को ऐतिहासिक भौतिकवाद कहा जाता है जबकि हीगल की विचारधारा वाद-संवाद प्रक्रियापरक प्रत्ययवाद कहलाती है।

यहाँ एक आधारभूत सवाल उठता है कि भौतिकवाद क्या है? भौतिकवाद में सभी वस्तुओं, यहाँ तक कि धर्म की भी, वैज्ञानिक व्याख्या की जाती है। भौतिकवाद को प्रत्ययवाद (idealism) की अवधारणा के विपरीत देखा जा सकता है। प्रत्ययवाद वह सिद्धांत है जिसमें अंतिम यथार्थ

पारलौकिक होता है। परंतु भौतिकवाद इस बात में विश्वास करता है कि सभी वस्तुयें स्थूलकाय पदार्थ पर आधारित हैं। भौतिकवाद की चर्चा तीन प्रकार से की जा सकती है। उदाहरणार्थ दार्शनिक भौतिकवाद, वैज्ञानिक भौतिकवाद तथा ऐतिहासिक भौतिकवाद। प्रथम दो प्रकार के भौतिकवादों की परिभाषा में न जाते हुये यह बता दें कि ऐतिहासिक भौतिकवाद मानवीय इतिहास के विकास में भौतिक दशाओं के उत्पादन की मूलभूत और कारणात्मक भूमिका पर ज़ोर देता है। यथार्थ की इस भौतिकवादी व्याख्या के सन्दर्भ में ही मार्क्स ने ऐतिहासिक घटनाओं का अध्ययन किया। आइए देखें कि इतिहास के बारे में मार्क्स का दृष्टिकोण क्या है।

6.2.1.4 इतिहास के प्रति समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

समाज और इतिहास के बारे में अपने सिद्धान्त को विकसित करने में मार्क्स ने हीगलवाद का खंडन किया। उसने हीगल के बाद आने वाले परायथार्थवादी (speculative) दर्शन का भी खंडन किया। उसने फायरबाख़ (देखिये कोष्ठक 6.3) के नृशास्त्रीय प्रकृतिवाद से प्रेरणा लेकर अपना स्वयं का एक मानववादी दृष्टिकोण विकसित किया। यह दृष्टिकोण ऐतिहासिक प्रक्रिया के समाजशास्त्रीय अध्ययन पर आधारित था। मार्क्स ने फ्रांसीसी भौतिकवाद, अंग्रेजी अनुभववाद (empiricism) तथा शास्त्रीय अर्थशास्त्र से प्रेरणा पाई। इस प्रेरणा के आधार पर उसने सभी सामाजिक प्रघटनाओं को समाज और प्रकृति की जटिल व्यवस्था में उनके स्थान और प्रकार्य के संदर्भ में समझने का प्रयास किया। मार्क्स का यह प्रयत्न हीगल और उसके अनुयायियों द्वारा मान्य दार्शनिक व्याख्याओं से एकदम भिन्न था। यही समझ बाद में मानव समाज के विकास और गठन की परिपक्व समाजशास्त्रीय अवधारणा बन गई।

कोष्ठक 6.3: लुडविग फ़ायरबाख़

लुडविग फायरबाख़ का जन्म 28 जुलाई, 1804 को बवेरिया प्रान्त के लान्ड्सहूट नामक स्थान पर हुआ तथा उसकी मृत्यु 13 सितम्बर, 1872 को न्युरम्बर्ग में हुई। वह एक भौतिकवादी दार्शनिक था। फ़ायरबाख़ द्वारा की गई धर्म पर हीगल के विचारों की आलोचना का युवा मार्क्स की लेखनी पर कुछ प्रभाव पड़ा।

फ़ायरबाख़ धर्मशास्त्र का विद्यार्थी था, जो कि बाद में दर्शनशास्त्र में रुचि लेने लगा। 1824 में उसने हीगल के भाषणों को सुना और परिणामस्वरूप उसने धर्म में विश्वास छोड़कर हीगलवादी दर्शन अपना लिया। अपनी पुस्तक, *थॉट्स ऑन डेथ एण्ड इम्मोर्टलिटी* (1830) में उसने आत्मा की अमरता को नकारा है। उसके इस विचार ने उस समय के बुद्धिजीवियों को काफ़ी उद्वेलित किया। उसके अधार्मिक विचारों के कारण ही उसे दर्शनशास्त्र के प्रोफ़ेसर का पद भी नहीं मिला। इस बात के विरोध में फ़ायरबाख़ ने अध्यापन बन्द कर दिया और एक स्वतंत्र रूप से जीविका चलाने वाला विद्वान बन गया। हीगल के प्रत्ययवाद (idealism) पर उसने अनेक आलोचनात्मक लेख लिखे और भौतिकवाद पर अपने विचार विकसित किये। 1850 में वह चिकित्सीय भौतिकशास्त्र अथवा मेडिकल मेटेरियलिज़्म से पूर्ण रूप से सहमत हो गया। उसने यह माना कि मानव अपने भोजन की प्रकृति और गुणवत्ता से बनता है। मार्क्स की बौद्धिक प्रगति में फ़ायरबाख़ के विचारों का प्रभाव केवल क्षणिक ही था।

6.2.2 मूल मान्यताएं

ऐतिहासिक भौतिकवाद मानव इतिहास के दर्शन पर आधारित है। फिर भी यह इतिहास का दर्शन नहीं है। सही तौर पर इसे मानवीय प्रकृति का समाजशास्त्रीय सिद्धांत कहा जा सकता है। सिद्धांत के रूप में यह अनुभवों पर आधारित अनुसंधान के लिये वैज्ञानिक तथा सुव्यवस्थित शोध का रास्ता दिखाता है। इसके साथ-साथ यह इस बात का दावा करता है कि समाज में परिवर्तन लाने के लिये एक क्रांतिकारी कार्यक्रम भी इसमें निहित है।

अत: यह सिद्धान्त वैज्ञानिक और क्रांतिकारी विशेषताओं का एक अद्वितीय मिश्रण है, और ऐसा मिश्रण मार्क्स के मौलिक सृजन की विशिष्टिता है। समाज के इस सिद्धांत अर्थात् ऐतिहासिक भौतिकवाद की वैज्ञानिक और क्रांतिकारी प्रतिबद्धताओं के बीच जटिल तथा असामान्य संबंध हैं। ये संबंध मार्क्सवादी समाजशास्त्रियों के लिए विवाद के प्रमुख मुद्दे रहे हैं। इन मुद्दों में न जाकर यहाँ ऐतिहासिक भौतिकवाद के वैज्ञानिक पक्ष (देखिये 6.2.2) की ही चर्चा की जा रही है। इस चर्चा के पहले आइए संक्षेप में समाज तथा मानव प्रकृति पर मार्क्स के विचार भी जान लें।

6.2.2.1 अन्तर्संबंधित समष्टि के रूप में समाज

मार्क्स के विचार में मानव समाज एक अन्तर्संबंधित समष्टि (whole) है। सामाजिक समूह, संस्थायें, विश्वास और विचारधारायें एक दूसरे के साथ जुड़े होते हैं। अत: मार्क्स ने इनको अलग-अलग समझने की अपेक्षा इनके अन्तर्संबंधों का अध्ययन किया है। उसके अनुसार इतिहास, राजनीति, कानून, धर्म तथा शिक्षा आदि का अलग-अलग इकाइयों के रूप में अध्ययन नहीं किया जा सकता है।

6.2.2.2 समाज की परिवर्तनशील प्रकृति

मार्क्स के अनुसार समाज में परिवर्तनशीलता अन्तर्निहित होती है, जिसमें परिवर्तन प्राय: आन्तरिक विरोधाभासों व संघर्षों का परिणाम होते हैं। यदि वृहद स्तर पर इस प्रकार के उदाहरणों का अध्ययन किया जाये तो मार्क्स के अनुसार इन परिवर्तनों के कारणों और परिणामों में पर्याप्त मात्रा में नियमितता पाई जाती है। इस नियमितता के आधार पर समाज के बारे में सामान्य राय बनाई जा सकती है। ये दोनों ही मान्यतायें मार्क्स के द्वारा बताई मानवीय प्रकृति से संबंधित हैं।

6.2.2.3 मानवीय प्रकृति तथा सामाजिक संबंध

मार्क्स का मानवीय प्रकृति के बारे में विचार ऐतिहासिक भौतिकवाद के पीछे एक मूल मान्यता है। इसके बिना यह सिद्धांत ठोस रूप नहीं ले सकता। मार्क्स के अनुसार मानव प्रकृति में कोई भी बात स्थाई नहीं है। मानव प्रकृति मूल रूप से न तो दुष्ट स्वभाव की है अथवा न ही मूल रूप से सज्जन स्वभाव की। मूलत: यह अनेक संभावनाओं से भरी है। यदि मानव प्रकृति के कारण मनुष्य इतिहास की रचना करता है तो वह इतिहास के साथ-साथ मानव प्रकृति भी निर्मित करता है और मानव प्रकृति में क्रांति की सभी संभावनायें होती हैं। मानव इच्छा शक्ति से उत्पन्न उपलब्धि घटनाओं का सीधा सादा इतिहास मात्र नहीं है, अपितु इसमें "मानव प्रकृति" की धारणाओं के अनुरूप उत्पन्न स्थितियों के विरुद्ध विद्रोह करने की शक्ति भी निहित है। ऐसा नहीं है कि मनुष्य भौतिक लालसा अथवा धन की लालसा में उत्पादन करता है। होता यह है कि जीवनोपयोगी वस्तुओं की उत्पादन की प्रक्रिया में मनुष्य ऐसे सामाजिक संबंधों में जाता है, जो उसकी इच्छा से स्वतंत्र होते हैं। मार्क्स के अनुसार लगभग पूरे मानवीय इतिहास में ये संबंध **वर्ग** संबंध है और इनसे **वर्ग संघर्ष** उत्पन्न होता है।

बोध प्रश्न 1

i) सही उत्तर पर निशान लगाइये।

मार्क्स ने जिससे दार्शनिक प्रेरणा प्राप्त की उस विद्वान का क्या नाम है ?

अ) कॉम्ट

ब) स्पेंसर

स) हीगल

द) अरस्तु

इ) कन्फ़्यूशस

ii) निम्न में से कौन से कथन ऐतिहासिक भौतिकवाद के लिये स्वीकार्य नहीं हैं ?

अ) सभी प्राणियों में मानव प्राणीशास्त्रीय रूप से सर्वाधिक निर्धारित जीव है।

ब) मानव प्रकृति मूलत: दुष्ट है।

स) वर्ग समाज में जीवन व्यतीत करने में मनुष्य सदैव प्रसन्न रहते हैं।

iii) निम्न में से कौन-सा कथन ऐतिहासिक भौतिकवाद की अनिवार्य विशिष्टता है ?

अ) समाज प्राणियों की भांति ही जन्म लेता है, बढ़ता है तथा परिवर्तित होता है।

ब) समाज में अनिवार्यत: परिवर्तनशील आन्तरिक विरोधाभासों के फलस्वरूप परिवर्तन होते हैं।

स) समाज एक छोटी इकाई के रूप में प्रारम्भ होता है तथा समय के साथ आकार में बढ़ता है।

द) समाज अपने वैज्ञानिकों के विकास के साथ-साथ विकसित होता है।

6.2.3 सिद्धांत

यहाँ हमने समाज के बारे में मार्क्स के विचारों को सरल शब्दों में प्रस्तुत किया है। उसका विचार दर्शन अनिवार्यत: उस समय के पूंजीवादी समाज की व्याख्या करने में प्रयुक्त हुआ है। उसने पूंजीवादी समाज की परस्पर विरोधी प्रकृति को दर्शाया है। आइये हम देखें कि मार्क्स ने इस कार्य को कैसे किया। यहाँ हमने मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद के सिद्धांत की विस्तार से विवेचना की है।

ऐतिहासिक भौतिकवाद से सिद्धांत की सुस्पष्ट व्याख्या मार्क्स द्वारा लिखित पुस्तक *ए कंट्रीब्यूशन टु द क्रिटीक ऑफ़ पॉलिटिकल इकॉनॉमी* (1859) के आमुख में दी गई है। इसमें उसने बताया कि समाज का वास्तविक आधार समाज की आर्थिक संरचना है तथा आर्थिक संरचना समाज में पाए जाने वाले उत्पादन के संबंधों से बनती है। समाज की वैधानिक और राजनैतिक **अधिसंरचना** (superstructure) उत्पादन के संबंधों पर आधारित होती है। मार्क्स ने यह भी कहा कि **उत्पादन के संबंध** समाज में पाई जाने वाली उत्पादन की शक्तियों के चरण को प्रतिबिम्बित करते हैं।

इस व्याख्या के अन्तर्गत आपका परिचय उत्पादन के संबंध, **उत्पादन के साधनों की शक्तियां** तथा अधिसंरचना जैसे शब्दों से हुआ। आपको हम यह बता दें कि मार्क्सवादी विचारधारा में इन शब्दों का विशेष अर्थ है। जैसे-जैसे इस खंड की अन्य इकाइयों का अध्ययन किया जाएगा, आपको इनके बारे में विस्तृत रूप से जानकारी मिलेगी। साथ में इस संदर्भ में इस इकाई की शब्दावली भी देखिये।

इस इकाई में आपको पहले मार्क्स के विचारों के केन्द्र बिन्दु को समझना आवश्यक है। यह केन्द्र बिन्दु है कि मार्क्स के अनुसार सामाजिक, राजनैतिक और बौद्धिक जीवन की प्रक्रिया सामान्य रूप से भौतिक उत्पादन पर आधारित होती है। इस तर्क के आधार पर मार्क्स ने इतिहास का सम्पूर्ण दृष्टिकोण देने का प्रयास किया है।

उसके अनुसार समाज की उत्पादक शक्तियों में होने वाले नये विकास समाज के वर्तमान उत्पादन के संबंधों के साथ टकराव की स्थिति के बारे में जागरूक हो जाते हैं तो इसका हल चाहते हैं और मार्क्स के अनुसार इतिहास का ऐसा युग क्रांति का युग कहलाता है। क्रांति के कारण संघर्ष का समाधान हो जाता है। अर्थात् उत्पादन की नई शक्तियां जड़ें जमा लेती हैं और नये उत्पादन संबंधों को जन्म देती हैं। अत: यह स्पष्ट है कि नई उत्पादक शक्तियों का विकास ही मानवीय इतिहास का मार्ग प्रशस्त करता है। समाज में उत्पादक शक्तियों का प्रयोग जीवन

की भौतिक आवश्यकताओं और दशाओं (condtions) के उत्पादन में होता है। अत: यह कहा जा सकता है कि मार्क्स के अनुसार मानव इतिहास भौतिक उत्पादन की नई शक्तियों के विकास और परिणामों का एक लेखा-जोखा है। और यही कारण है कि इतिहास के बारे में मार्क्स के इस दृष्टिकोण को ऐतिहासिक भौतिकवाद कहा गया। संक्षेप में यही ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत है।

इस सिद्धांत की विस्तृत विवेचना करने से पूर्व यह आवश्यक है कि हम आपको बतायें कि मार्क्सवाद के विभिन्न अनुयायी इस सिद्धांत की अलग-अलग व्याख्यायें प्रदान करते हैं। परन्तु हमने यहाँ पर ऐतिहासिक भौतिकवाद की प्राय: सभी द्वारा मान्य व्याख्या को ही समझने की कोशिश की है। यहाँ यह बात ध्यान रखने योग्य है कि इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा सामाजिक संगठन के विभिन्न स्वरूपों की व्याख्या हेतु कोई चालू मसाला या फ़ार्मूला वाला सूत्र नहीं है। इसे पहले मार्क्स के विचार-दर्शन के संदर्भ में ही समझना चाहिये। मार्क्सवादी ऐतिहासिक भौतिकवाद के सिद्धांत को समझने के लिये हमने जिन शब्दों का प्रयोग किया, आइये अब उनकी व्याख्या करें। पहला है सामाजिक संबंध।

6.2.3.1 व्यक्तियों से परे सामाजिक संबंध

मार्क्स के अनुसार यह एक सामान्य सिद्धांत है कि जीवनोपयोगी भौतिक आवश्यकताओं का उत्पादन (जो कि समाज की मौलिक आवश्यकता होती है) व्यक्तियों को कुछ ऐसे निश्चित संबंधों से जोड़ता है जो कि उनकी इच्छाओं से स्वतंत्र होते हैं। यह मार्क्स द्वारा दिया समाज के सिद्धांत का मूल विचार है। उसने इस बात पर बल दिया कि कुछ ऐसे सामाजिक संबंध होते हैं जो लोगों की निजी इच्छाओं और प्राथमिकताओं से स्वतंत्र होते हैं तथा उन पर दबाव डालते हैं। उसने आगे स्पष्ट किया कि हमारी ऐतिहासिक प्रक्रिया की समझ इस बात पर निर्भर करती है कि हम सामाजिक संबंधों के बारे में कितने जागरूक हैं।

6.2.3.2 अधोसंरचना (infrastructure) तथा अधिसंरचना (superstructure)

मार्क्स के अनुसार, प्रत्येक समाज में **अधोसंरचना** (infrastructure) तथा अधिसंरचना (superstructure) होती है। जब सामाजिक संबंध भौतिक दशाओं के संदर्भ में परिभाषित किये जाते हैं तो उसे मार्क्स ने अधोसंरचना कहा है। किसी भी समाज की भौतिक दशाओं में परिवर्तन से उसके सामाजिक संबंधों में भी परिवर्तन होता है। उत्पादन की शक्तियां और संबंध अधोसंरचना के अंतर्गत आते हैं। अधिसंरचना में वैधानिक, शैक्षणिक तथा राजनैतिक संस्थायें, मूल्य, चिन्तन के संस्कृतिपरक तरीके, धर्म, विचारधारायें और दर्शनशास्त्र आते हैं। उदाहरणत: राज्य संस्थाओं व उपकरणों का वह समूह है जो प्रभुत्वशील वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है और यह समाज की अधिसंरचना का भाग होता है।

6.2.3.3 उत्पादन की शक्तियां और संबंध

मार्क्स के अनुसार उत्पादन की शक्तियां समाज की उत्पादन क्षमता को दिखाती हैं। उत्पादन की यह क्षमता वस्तुत: वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान, प्रौद्योगिक उपकरण, श्रम शक्ति से तय होती है। उत्पादन के संबंध उत्पादन प्रक्रिया से पैदा होते हैं। इसमें अनिवार्यत: उत्पादन के साधनों के स्वामित्व से उपजे संबंध भी शामिल होते हैं। परंतु, उत्पादन के संबंधों को पूरी तरह से सम्पत्ति के संबंधों के माध्यम से ही नहीं पहचाना जाना चाहिये। मार्क्स का कहना है कि कालांतर में समाज एक अवस्था से दूसरी अवस्था में बदल जाता है। इस बदलाव की प्रक्रिया को समझाने के लिए मार्क्स ने ऐतिहासिक चरणों की संकल्पना की।

6.2.3.4 सामाजिक वर्गो के संदर्भ में सामाजिक परिवर्तन

मार्क्स ने प्रमुख सामाजिक वर्गो के गठन की चर्चा करते हुये समाज की अधोसंरचना

(infrastructure) के महत्व पर प्रकाश डाला। उसने वर्ग संघर्ष में आंतरिक द्वन्द्व से उपजने वाले सामाजिक परिवर्तन के विचार को विकसित किया। मार्क्स के अनुसार सामाजिक परिवर्तन का एक नियमित विन्यास होता है। मोटे रूप से मार्क्स ने समाज के मुख्य प्रकारों का ऐतिहासिक क्रम बताया है। इस क्रम में पहले "आदिम साम्यवाद" वाला सरल समाज आता है व बाद में आधुनिक पूंजीवादी जटिल समाज आता है। उसने महान ऐतिहासिक परिवर्तनों की व्याख्या की है। उसके अनुसार अधोसंरचनात्मक परिवर्तनों के संदर्भ में समाज के पुराने स्वरूप नष्ट हो जाते हैं और नये स्वरूप सृजित होते हैं। इस प्रक्रिया को मार्क्स ने सतत चलने वाली एक सामान्य प्रक्रिया माना है। उत्पादन की शक्तियां और संबंधों के मध्य विरोधाभास के प्रत्येक काल को मार्क्स ने क्रांति का युग माना है।

6.2.3.5 उत्पादन की शक्तियां और संबंधों के मध्य वाद-संवाद प्रक्रियापरक संबंध

क्रांति युग में, यदि समाज का एक वर्ग उत्पादन के पुराने संबंधों से जुड़ा होता है और ये संबंध उत्पादन की शक्तियों के विकास में रुकावट डालते हैं तो, दूसरी ओर, दूसरा परिवर्तन चाहता है। यह वर्ग उत्पादन के नये संबंधों के लिये प्रयास करता है। उत्पादन के नये संबंध उत्पादन की शक्ति के विकास में बाधा नहीं पहुंचाते। ये इन शक्तियों की अधिकाधिक प्रगति को प्रोत्साहित करते हैं। वर्ग संघर्ष पर मार्क्स के विचारों की यह भावबाचक (abstract) अभिव्यक्ति है।

6.2.3.6 क्रांति तथा समाजों का इतिहास

उत्पादन की शक्तियों और संबंधों के मध्य वाद-संवाद प्रक्रियापरक संबंध से क्रांति के सिद्धांत का निर्माण होता है। मार्क्स के ऐतिहासिक दृष्टिकोण के अनुसार क्रांतियाँ राजनैतिक दुर्घटनायें अथवा संयोग नहीं है। वे ऐतिहासिक आंदोलनों की सामाजिक अभिव्यक्तियां हैं। क्रांतियाँ समाजों की ऐतिहासिक प्रगति की अनिवार्य अभिव्यक्तियां है। क्रांतियाँ तभी घटित होती हैं, जब कि उनके लिए परिपक्व दशायें उत्पन्न हों। मार्क्स (1859: आमुख) ने लिखा है, "जब तक कि सभी संभव उत्पादन की शक्तियां पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो जातीं तब तक कोई भी सामाजिक व्यवस्था लुप्त नहीं होती तथा जब तक प्राचीन समाज के गर्भ में नये उत्पादन के संबंधों के लिये भौतिक दशायें परिपक्व नहीं हो जातीं तब तक उत्पादन के नये उच्चतर संबंध नहीं उभर पाते।"

इसी बात को एक उदाहरण के माध्यम से अधिक बेहतर रूप से समझाया जा सकता है। सामन्तवादी समाज में उत्पादन के पूंजीवादी संबंध विकसित हुये और जब ये उत्पादन के संबंध परिपक्व अवस्था में पहुंच गये तो यूरोप में फ्रांसीसी क्रांति हुई। यहाँ मार्क्स ने पूंजीवाद से समाजवाद की ओर ले जाने वाली परिवर्तन की एक अन्य प्रक्रिया की भी चर्चा की अर्थात् पूंजीवादी समाजों में समाजवादी उत्पादन के संबंध विकसित होने लगे। इस प्रकार मार्क्स ने समाज की ऐतिहासिक गतिमानता की व्याख्या की।

6.2.3.7 यथार्थ तथा चेतना

जैसा कि हमने पहले बताया है मार्क्स ने अधोसंरचना और अधिसंरचना के बीच अंतर किया है। इसके साथ-साथ उसने सामाजिक यथार्थ (social reality) और चेतना (consciousness) में भी भेद किया है। मार्क्स के अनुसार यथार्थ मानवीय चेतना से नहीं बनता। अपितु सामाजिक यथार्थ से मानवीय चेतना बनती है। मार्क्स का यह विचार एक पूर्ण अवधारणा के रूप में विकसित होता है। इसमें मानवीय चेतना की व्याख्या सामाजिक संबंधों के सन्दर्भ में ही की जा सकती है।

उत्पादन की शक्तियों और संबंधों के अतिरिक्त मार्क्स ने उत्पादन के तरीकों की भी चर्चा की है। इनके आधार पर मार्क्स ने मानव इतिहास की अवस्थाओं की व्याख्या एशियाटिक, प्राचीन, सामन्तवादी तथा पूंजीवादी-चार उत्पादन के तरीकों के संदर्भ में की है। उसके अनुसार पश्चिमी

समाज का इतिहास हमें प्राचीन सामन्तवादी तथा पूंजीवादी उत्पादन के तरीक़ों के बारे में बताता है। प्राचीन (ancient) उत्पादन के तरीक़े की विशिष्टता है दासत्व। सामन्तवादी उत्पादन के तरीक़े की विशेषता है भूमिहीन किसान। पूंजीवादी उत्पादन के तरीक़े की विशेषता है श्रम से आजीविका अर्जित करना। ये मानव श्रम के शोषण के तीन स्पष्ट तरीक़े हैं। दूसरी ओर, एशियाटिक उत्पादन का तरीक़ा पश्चिमी समाज के इतिहास की अवस्था नहीं है। इसकी विशिष्टता है कि इसमें सर्वसामान्य लोग राज्य अथवा राज्य प्रशासन तंत्र के अधीन होते हैं।

सोचिए और करिए 1

भौतिकवाद, उत्पादन, क्रांति तथा चेतना के लिये आपकी मातृभाषा में क्या शब्द हैं ? इन शब्दों की व्याख्या करने के लिये आप अपने सामाजिक जीवन से उदाहरण दीजिये।

6.3 ऐतिहासिक भौतिकवाद आर्थिक निर्धारणवाद नहीं है

यह संभव है कि आप मार्क्स को आर्थिक निर्धारणवादी अथवा इस विचार का प्रतिपादक मान लें कि केवल आर्थिक दशायें ही समाज के विकास को निश्चित करती हैं। परन्तु यहाँ पर यह स्पष्ट किया जाएगा कि ऐतिहासिक भौतिकवाद आर्थिक निर्धारणवाद नहीं है। मार्क्स ने यह माना कि संस्कृति के बिना किसी भी प्रकार का उत्पादन संभव नहीं है। उसके अनुसार उत्पादन के तरीक़ों में उत्पादन के सामाजिक संबंध भी शामिल होते हैं। ये संबंध आधिपत्य और अधीनता के होते हैं। जीवन तथा जीवन के भौतिक साधनों के उत्पादन को कामगार लोगों की संस्कृति, प्रतिमानों तथा रीति-रिवाजों को समझे बिना नहीं समझा जा सकता है। कामगार लोग वे हैं, जिन पर शासक शासन करते हैं। कामगार वर्ग की संस्कृति की समझ हमें उत्पादन के तरीक़ों की समझ में सहायता देती है। आइए यहाँ वर्ग की अवधारणा को संक्षेप में समझें।

वर्ग एक वह श्रेणी है, जिसमें व्यक्तियों के कालांतर में बन गए संबंधों का वर्णन किया जाता है। इसी श्रेणी में वे तरीक़े भी आते हैं जिनसे लोग इन संबंधों के प्रति जागरूक हो जाते हैं। वर्ग में उन तरीक़ों का भी वर्णन होता है, जिनसे लोग आपस में बंट जाते हैं या जुड़ते हैं, संघर्ष में शामिल होते हैं, संस्थायें निर्मित करते हैं व वर्ग के अनुरूप मूल्यों का संरक्षण करते हैं। वर्ग एक आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना है। वर्ग को विशुद्ध रूप से आर्थिक श्रेणी में रखना असंभव है।

सोचिए और करिए 2

क्या आपके विचार में भारतीय समाज के अध्ययन के लिए कार्ल मार्क्स के विचार उपयोगी हैं? अपने सकारात्मक नकारात्मक उत्तर के लिये कम से कम दो कारण बताइये। अपने उत्तर की तुलना अध्ययन केंद्र के अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से कीजिए।

6.4 समाजशास्त्रीय सिद्धांत में ऐतिहासिक भौतिकवाद का योगदान

ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत आधुनिक समाजशास्त्र के गठन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हीगल, सेन्ट सीमों तथा एडम फर्ग्यसन जैसे विविध चिंतकों की कृतियों में मार्क्स के विचार की छवि देखने को मिलती है। इन सभी ने मार्क्स को अत्यधिक प्रभावित किया। उसने समाज की प्रकृति की अवधारणा और इसके अध्ययन के समुचित तरीक़ों पर विस्तृत प्रकाश डाला। यह काम उसने अपने पूर्ववर्ती विद्वानों की अपेक्षा अधिक सटीक और आनुभाविक तरीक़े से किया। प्रत्येक समाज की संरचना को समझने के लिये उसने एक पूर्ण रूप से नया तत्व दिया। यह तत्व सामाजिक वर्गों के बीच पाए जाने वाले संबंधों से निकला था। ये संबंध मार्क्स के अनुसार उत्पादन के तरीक़ों द्वारा निश्चित होते थे। ऐतिहासिक भौतिकवाद के इस लक्षण के

कारण इसे बाद के समाजशास्त्रियों ने व्यापक रूप से स्वीकार किया क्योंकि सामाजिक परिवर्तन के कारणों का सही एवं यथार्थवादी अनुसंधान करने के लिये इसने एक अच्छी शुरुआत की संभावना दी।

इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक भौतिकवाद ने समाजशास्त्र में अन्वेषण की एक नयी पद्धति, नई अवधारणायें, तथा अनेक नई परिकल्पनायें प्रारंभ की जो कि समाज के विशिष्ट स्वरूपों के उदय, विकास एवं विनाश की व्याख्या करती हैं। इन सभी ने उन्नीसवीं शताब्दी के बाद के दशकों में समाजशास्त्रियों की लेखनी पर गहन प्रभाव डाला।

अरस्तु के समय से चली आ रही समाज के बारे में ज्ञान की विरासत को ऐतिहासिक भौतिकवाद ने आलोचनात्मक ढंग से संश्लिष्ट किया। मार्क्स का लक्ष्य था मानवीय विकास की दशाओं को समझना। अपनी इस समझ के आधार पर वह एक बेहतर समाज की स्थापना करना चाहता था। उसके अनुसार इस समाज में होंगे - तर्कसंगत नियोजन, सहकारी उत्पादन, समानता पर आधारित वितरण और सामाजिक-राजनैतिक शोषण से मुक्ति।

अंतत: वर्तमान सामाजिक यथार्थ को समझने के लिये ऐतिहासिक भौतिकवाद न केवल एक पद्धति प्रदान करता है, अपितु यह अन्य पद्धतियों के अस्तित्व को समझने के लिये भी एक पद्धति है। यह सामाजिक विज्ञानों की पद्धति और लक्ष्यों का निरंतर आलोचक है।

बोध प्रश्न 2

i) उत्पादन के संबंधों और उत्पादन की शक्तियों को तीन पंक्तियों में परिभाषित कीजिये।

.....

.....

.....

ii) अधिसंरचना के विभिन्न घटकों को दो पंक्तियों में सूचीबद्ध कीजिये।

.....

.....

.....

iii) राज्य की परिभाषा दीजिये। राज्य का संबंध किससे है ?

अ) अधोसंरचना से अथवा

ब) अधिसंरचना से?

6.5 सारांश

सारांशत:, इस इकाई में आपने निम्नलिखित तीन बिंदुओं को विस्तार से समझा।

i) ऐतिहासिक भौतिकवाद सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक तथ्यों की भौतिकवादी व्याख्या है। इसके अनुसार इतिहास की व्याख्या में विचारों का स्थान नहीं है अपितु हमें समझना चाहिए कि सामाजिक संस्था और उनसे संबंधित मूल्य उत्पादन के तरीक़ों से निर्धारित होते हैं। ध्यान रहे कि मार्क्स के संदर्भ में 'निर्धारित' शब्द का तात्पर्य निर्धारणवाद से नहीं लिया जाना चाहिये।

ii) ऐतिहासिक भौतिकवाद मानवीय प्रगति का वाद-संवाद प्रक्रियापरक सिद्धांत है। इसके अनुसार प्रकृति की शक्तियों पर नियंत्रण करने के मानवीय प्रयासों का ही विकास इतिहास है। दूसरे शब्दों में उत्पादन के विकास को इतिहास कहा जा सकता है। सारा उत्पादन

सामाजिक संगठन के अन्तर्गत होता है, अत: इतिहास सामाजिक व्यवस्थाओं में परिवर्तनों का क्रम है। इस क्रम में मानवीय संबंधों का विकास उत्पादक गतिविधियों पर आधारित होता है। उत्पादक गतिविधि या **उत्पादन की प्रणाली** का आधार अर्थव्यवस्था होती है तथा सभी अन्य प्रकार के संबंध, संस्थायें, गतिविधियां तथा विचार अधिसंरचनात्मक (superstructural) होते हैं।

iii) इतिहास प्रगति है, क्योंकि मनुष्य की उत्पादन की शक्तियां, उत्पादन की क्षमतायें निरंतर बढ़ती रहती है। यह अवनति भी है, क्योंकि उत्पादन की शक्तियों को सर्वश्रेष्ठ बनाने के प्रयास में हमने अधिकाधिक जटिल तथा शोषक सामाजिक संगठन का सृजन भी कर लिया है।

6.6 शब्दावली

ए. ह्यूम

ह्यूम एक अनीश्वरवादी (agnostic) दार्शनिक था जो यह मानता था कि अन्तिम यथार्थ अज्ञात है।

एलेक्सिस द टॉक्विल

अलेक्सिस द टॉक्विल को 19वीं शताब्दी के फ्रांस का महान् राजनीतिक चिन्तक माना जाता है। उसने दो प्रमुख पुस्तकें लिखीं

i) *डेमोक्रेसी इन अमेरीका*

ii) *द ओल्ड रेजीम एण्ड द फ्रेन्च रिवोल्यूशन*

अपनी पहली पुस्तक में उसने एक विशिष्ट समाज, अर्थात् अमरीकन समाज, का चित्रण दिया और दूसरी पुस्तक में एक ऐतिहासिक घटना, अर्थात् फ्रांसीसी क्रांति, का विश्लेषण दिया। मार्क्स लोकतंत्र पर टॉक्विल के विचारों से बहुत अधिक प्रभावित था।

बी. द स्पिनोज़ा

स्पिनोज़ा सत्रहवीं शताब्दी का डच दार्शनिक था। उसने यह प्रतिपादित किया कि यथार्थ की अनेक विशेषतायें होती हैं, जिनमें से चिन्तन और विस्तारण को ही मानव मस्तिष्क द्वारा समझा जा सकता है।

वर्ग

मूलभूत सामाजिक समूह अथवा वह सामूहिकता जिसमें एक ठोस सामाजिक शक्ति के रूप में कार्य करने की क्षमता हो। इसे भौतिक उत्पादन के साधनों के स्वामित्व अथवा अस्वामित्व के संदर्भ में देखा जा सकता है।

वर्ग संघर्ष

दो परस्पर विरोधी सामाजिक वर्गों के मध्य संघर्ष जो इतिहास की गतिशील शक्ति है

उत्पादन के साधनों की शक्तियां

भौतिक वस्तुओं के उत्पादन में प्रयुक्त कच्चा माल, उपकरण तथा तकनीक। भौतिक तकनीकी पक्षों को उत्पादन के सामाजिक संबंधों में भ्रमित नहीं करना चाहिये, इनमें अन्तर है।

अधोसंरचना

समाज के सन्दर्भ में उत्पादन के तरीकों को मूल सैद्धान्तिक प्राथमिकता देने के लिये प्रयुक्त उपमा। इसमें उत्पादन के संबंध तथा उत्पादन के साधन शामिल होते हैं।

उदारवादी	जो प्रगति, व्यक्ति की स्वायत्तता तथा मानव मात्र के भले स्वभाव में विश्वास करता है
उत्पादन की प्रणाली	उत्पादन के संबंध और उत्पादन की शक्तियों के बीच पाए जाने वाले संबंध
सर्वहारा (प्रोलिटेरियन)	किसी भी समुदाय के निम्नतम सामाजिक आर्थिक वर्ग के प्रतिनिधि
उत्पादन के संबंध	जीवन की भौतिक दशाओं के उत्पादन के फलस्वरूप प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से उभरने वाले सामाजिक संबंध
अधिसंरचना	अधिसंरचना के अस्तित्व की सामाजिक दशाओं का प्रतिनिधित्व करने वाली उपमा। इसके अन्तर्गत राज्य, विद्यालय, धार्मिक संस्थायें, संस्कृति, विचार, मूल्य तथा दर्शन आते हैं।
राज्य	संस्थाओं तथा उपकरणों का वह समूह जो कि प्रभुत्वशील वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है तथा उनके हितों की परिपूर्ति करता है यह अधिसंरचना का भाग है और अपेक्षाकृत रूप में इसे अधोसंरचना से अलग ही समझना चाहिए।

6.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

बोटोमोर, टॉम, 1975. मार्क्सवादी समाजशास्त्र, अनुवादक: सदाशिव द्विवेदी, मैक्मिलन कम्पनी: नई दिल्ली

सांस्कृतायन, राहुल, 1954. कार्ल मार्क्स, किताब महल: इलाहाबाद

6.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) स)

ii) अ), ब), स)

iii) ब)

बोध प्रश्न 2

i) शब्दावली देखिये।

ii) राज्य, शिक्षा, धर्म, मूल्य, विचार एवं दर्शन आदि

iii) शब्दावली देखिये।